जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक ५ वा ❖ जानेवारी २०२४ ❖ वीर संवत २५५० ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात	पान नं.		पान नं.
• गिरनार तीर्थ	१५	• ऐसी हुई जब गुरुकृपा : गैर मत मान किणी ने भी	७१
• हमारे समाज को तुरन्त आवश्यकता है	१७	• विवेकाचा परीस स्पर्श	७५
• सकारात्मक हो दृष्टि अपनी	१९	• श्री. अभयजी संचेती, पुणे – पुरस्कार	७८
• समाधान ही सुख	२१	• जागृत विचार	७८
• बन्धन, बन्धन है	२२	• सुर्यदत्त ग्लोबल फार्माकॉन – २०२३	७९
• कव्हर तपशील	२५	• भारतीय जैन संघटना, पुणे – परिचय संमेलन	८०
• मोक्ष मार्ग के २१ कदम : माया	३१	• गौतम लब्धी फेस्टीवल, पुणे	८१
• कलात्मक जीओ, सुखी बनो	४१	• सकारात्मक नव उर्जा प्रेरणा देते	८१
• वैराग्य वाणी	४३	• हास्य जागृती	८२
• मनाची सल	४४	• श्री कृष्णकुमारजी गोयल, पुणे – सन्मान	८७
• जिन शासन के चमकते हीरे : चंदनबाला	४५	• षड्रिपूं वर विजय	८८
• स्वयं को बदलो	६१	• धारिवाल फाऊंडेशन – रुग्णवाहिका भेट	८९
• जीवन बोध : सर्वश्रेष्ठ कौन	६२	• अरिहंत प्रतिष्ठान लेक टाऊन, पुणे – स्थानक उद्घाटन	९०
• नफरत VS प्यार	६४		
• बिन जाने कित जाऊँ – प्रश्नोत्तर प्रवचन	६५		
• मंत्राधिराज प्रवचन सार	६९		

- आर एम डी फाउंडेशन – मॅरेथॉन स्पर्धा ९१
- बी.जे.एस. राष्ट्रीय अध्यक्षपदी – श्री. नंदकिशोरजी साखला ९२
- आनंद दरबार, पुणे – दीक्षा महोत्सव ९३
- कु. पल्लवी चोरडिया – MS ९३
- अप्पा सो परमप्पा ९५
- मोफत प्लास्टीक सर्जरी शिबीर – अहमदनगर ९७
- श्री अर्चनाजी म.सा. – डॉक्युमेंटरी फिल्म ९९
- संसाराची शाळा १००
- सुरक्षा गति उत्तेजना पैदा करती है परन्तु मारती है १०१
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये. • Google Pay - M. 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/ AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

गिरनार तीर्थ

लेखक : महोपाध्याय श्री ललितप्रभसागरजी म.सा.

गिरनार बचाओ – तीर्थ बचाओ के आंदोलन में दि. १७ डिसेंबर २०२३ को समस्त जैन समाज द्वारा रामलीला मैदान, दिल्ली में विशाल रॅली का आयोजन किया गया । पुरे भारत से लोगों ने इसमें भाग लिया । जैन तीर्थ बचाओ संदर्भ में अनेक मान्यवर ने अपने विचार रखें । गिरनार तीर्थ का लेख यहाँ प्रकाशित किया है ।

– संपादक

गिरनार वह पावन स्थली है जिससे नेमि-राजुल की प्रेम, विरह, वैराग्य, कैवल्य और निर्वाण की अत्यन्त लोम हर्षक गाथाएँ जुड़ी हुई है । कुमार अरिष्टनेमि विवाह हेतु राजीमती के द्वार पर उपस्थित होते हैं, किन्तु दावत के लिए एकत्रित पशुओं की करुण चीत्कार सुनकर अरिष्टनेमि विवाह से विमुख हो जाते हैं। पशु-वधशाला के द्वार खोलकर पशुओं को मुक्त करवा दिया जाता है और विवाह के लिए प्रस्तुत अरिष्टनेमि राजीमती की वरमाला स्वीकार करने की बजा गिरनार पर्वत की और अपने कदम बढ़ा लेते है । अरिष्टनेमि के इस अभिनिष्क्रमण की कथा को न केवल घर-घर में गाया-सुनाया जाता है, वरन् जैन-धर्म के तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भी इस महान् करुणा के चित्रित दृश्य को देखकर प्रभावित हो जाते हैं और प्रवज्या स्वीकार कर लेते हैं ।

राजीमती की वरमाला उसके हाथों में ही धरी रह

जाती है । हल्दी और मेहंदी अपना रंग तो ले आती है, पर माँग भरने से पहले ही अहिंसा और करुणा का ऐसा अमृत अनुष्ठान होता है कि अरिष्टनेमि गिरनारवासी श्रमण हो जाते है । राजीमती भी उनके पावन पदचिन्हों का अनुसरण करती है । अरिष्टनेमि को गिरनार पर्वत पर साधना करते हुए ध्यान की उज्ज्वल भूमिका में परमज्ञान उपलब्ध होता है । राजीमती, जो किसी वक्त नेमिनाथ की पत्नी होने वाली थी, अरिष्टनेमि के साध्वी संघ की प्रवर्तिका और अनुशास्ता बनी । अरिष्टनेमि भगवान महावीर से करीब बहत्तर हजार वर्ष पूर्व हुए ।

गिरनार पर्वत पर अरिष्टनेमि और राजीमती के अतिरिक्त अन्य अनेकानेक संत, महंत और सिध्द योगियों का निर्वाण हुआ । सचमुच यह वह स्थली है, जो भारतीय आराध्य स्थलों का प्रतिनिधित्व करती है।

गिरनार गुजरात के जूना गढ़ के पास समुद्र-तल से ३१०० फुट ऊँची पर्वतावली है । गगन चूमती पर्वत मालाओं के बीच परिनिर्मित यह पावन तीर्थ जैन-धर्म और हिन्दु-धर्म दोनों का पूज्य आराध्य स्थल है । जैनों में भी श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही आम्नाय के अनुयायी इस तीर्थ की पवित्र माटी को अपने शीश पर चढ़ाने के लिए आते है । एक दृष्टि से तो यह पालीताना महातीर्थ की पाँचवी टूंक माना जाता है । यद्यपि पहाड़ की चढ़ाई कठिन है, किन्तु सं. १२२२ में राजा कुमारपाल के महामंत्री आम्रदेव के प्रयासों से दुर्गम चढ़ाई को अपेक्षाकृत सरल बनाया हुआ है ।

पर्वत पर स्थित मंदिर एक प्रकार से मंदिरों का गाँव ही दिखाई देता है । मंदिरों की भव्यता और सुंदरता अपने आप में बेमिसाल है । मंदिरों का जैसा शिल्प और आकार शास्त्रीय परम्परानुसार मान्य है गिरनार पर्वत के मंदिरों को उसका आदर्श कहा जाना चाहिए । गुजरात के महान् धुरंधर शिल्पियों की शिल्पकला का यहाँ प्राचीन खजाना देखने को मिल जाता है । मंदिर को चाहे बाहर से देखा जाये, चाहे भीतर से श्रध्दा और कला ही अपने परिपूर्ण वैभव के साथ मुखरित हुई है ।

गिरनार-पर्वत भी विदेशी आक्रमकों से अछूता नहीं रहा है, लेकिन इसके बावजूद समय-समय पर अनेक सम्राटों तथा श्रेष्ठि श्रध्दालुओं ने तीर्थ के जीर्णोध्दार एवं विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाया है।

सं. ६०९ में काश्मीर के श्रेष्ठि श्री अजितशाह तथा रत्नाशाह द्वारा तीर्थोद्वारा किए जाने का उल्लेख प्राप्त होता है । बारहवीं सदी में सिध्दराज के मंत्री श्री सज्जन शाह तथा प्रसिध्द महामंत्री श्री वस्तुपाल-तेजपाल द्वारा जीर्णोध्दार होने का शिलालेख यहाँ उत्कीर्ण है । राजा मंडलिक ने तेरहवी सदी में यहाँ स्वर्ण-पत्रों से मंडित मंदिर बनवाया था । चौदहवी सदी में समरसिंह सोनी, सतरहवीं सदी में वर्धमान और पद्मसिंह ने तीर्थ का उध्दार करवाया । बीसवी सदी में नरसी केशवजी द्वारा पुनरोध्दार का उल्लेख प्राप्त होता है । इनके अतिरक्त भी कई ऐसे अनेक सम्राट-सामन्तों ने इस तीर्थ के विकास में अपनी अहं भूमिका निभायी है, जिनमें राजा संप्रति, राजा कुमारपाल, मंत्री सामंतसिंह, मंत्री संग्राम सोनी तथा मंत्री आम्रदेव आदि का नाम उल्लेखनीय है ।

गिरनार पर्वत की तलहटी में दो श्वेताम्बर एवं एक दिगम्बर मंदिर है । तलहटी के मंदिर के निकट ही पर्वत की चढाई प्रारम्भ होती है । चढाई काफी कठिन है। लगभग ३ कि.मी. लम्बे मार्ग में कम से कम ४००० सीढ़ियाँ हैं, पर भक्त का हृदय जब प्रभु दर्शन को लालायित हो तो फिर दुर्गम, दुर्गम कहाँ रह पाता है । अभी कुछ सालों पहले यहाँ रोप वे शुरु हुआ है ।

चढ़ाई पूर्ण होने पर श्री नेमिनाथ भगवान की मुख्य टूंक का द्वार दिखाई देता है । यहाँ ९० X १३० फुट के विशाल चौक के मध्य में परिनिर्मित जिनालय अपनी अद्‌भुत छटा बिखेरता है । इस जिनालय के सामने ही मानसंग भोजराज की टूंक है । मंदिर के मूलनायक श्री संभवनाथ है । मुख्य टूंक की उतर दिशा में कुछ दूरी पर मेलकवसही टूंक है । सिध्दराज के महामंत्री सज्जन सेठ द्वारा निर्मापित इस टूंक में मूलनायक श्री सहस्रफणा पार्श्वनाथ है । इस टूंक में तीर्थंकर आदिनाथ की एक

विशाल प्रतिमा है जिसे लोग 'अदभुत जी' भी कहते हैं । यहाँ से कुछ दूरी पर संग्राम सोनी की टूंक है । प्राप्त उल्लेखों से ज्ञात होता है कि इस मंदिर का निर्माण सोनी समरसिंह और मालदेव ने कराया था । मुख्य मंदिर दो मंजिल का है जिसके मूलनायक श्री सहस्रफणा पार्श्वनाथ है ।

संग्राम सोनी की टूंक के आगे कुमारपाल राजा की टूंक है । प्राप्त सन्दर्भों से ज्ञात होता है कि इस टूंक का निर्माण राजा कुमारपाल ने तेरहवीं सदी में किया था। यहाँ के मूलनायक श्री अभिनन्दन स्वामी हैं । यहाँ निकट में भीमकुंड और गजपद कुंड भी है । इस टूंक में कुछ दूरी पर वस्तूपाल-तेजपाल की टूंक है । वहाँ उत्कीर्ण शिलालेख से ज्ञात होता है कि सं. १२८८ में इस टूंक का निर्माण हुआ था । टूंक में श्री पार्श्वनाथ भगवान, श्री ऋषभदेव भगवान एवं श्री महावीर स्वामी के मंदिर हैं । ऋषभदेव स्वामी के मंदिर में अब श्री शामला पार्श्वनाथजी की प्रतिमा विराजमान है ।

इस टूंक के पास ही श्री संप्रति राजा की टूंक है । मंदिर काफी विशाल एवं प्राचीन है । मंदिर के मूलनायक श्री नेमिनाथ भगवान है । यहाँ से कुछ दूरी पर क्रमश: श्री चौमुखजी, श्री संभवनाथ भगवान की टूंक, धर्मशी हेमचन्द्रजी की टूंक, सही राजुलमति की गुफा, गौमुखी गंगा एवं चौबीस जिनेश्वर की टूंक है ।

गिरनार की पाँच टूंकें प्रचलित हैं । पहली टूंक तीर्थंकर नेमिनाथ की है । दूसरी टूंक श्री अंबाजी की है । तीसरी टूंक को ओघड़ शिखर कहते हैं जहाँ नेमिनाथ भगवान की चरण पादुकाएँ प्रतिष्ठित हैं । चौथी टूंक पर भी नेमिनाथ के चरण हैं । पाँचवी टूंक बीहड़ जंगल में पर्वत की ऊँची चोटी पर है जिसमें नेमिनाथ एवं वरदत्त गणधर की चरण पादुकाएँ हैं ।

प्राकृतिक सुषमा से अभिमंडित इस पावन तीर्थ की यात्रा जीवन का सौभाग्य है । प्रणाम हैं, नेमि और राजुल को जिनके चरण स्पर्श से गिरनार की पर्वतावली धन्य हुई । प्रणाम हैं, उन आत्माओं को भी जो यहाँ की पवित्र माटी का स्पर्श कर धन्य होते हैं । ●

हमारे समाज को तुरंत आवश्यकता है

* **एक इलेक्ट्रिशियन –**
जो ऐसे दो व्यक्तियों के बीच कनेक्शन कर सके जिनकी आपस में बातचीत बन्द है।
* **एक ऑप्टिशियन –**
जो लोगों की दृष्टि के साथ दृष्टिकोण में भी सुधार कर सके।
* **एक चित्रकार –**
जो हर व्यक्ति के चेहरे पर मुस्कान की रेखा खींच सके।
* **एक राज मिस्त्री –**
जो दो पड़ोसियों के बीच पुल बनाने में सक्षम हो।
* **एक माली –**
जो अच्छे विचारों का रोपण करना जानता हो।
* **एक प्लम्बर –**
जो टूटे हुए रिश्तों को जोड़ सके।
* **एक वैज्ञानिक –**
जो दो व्यक्तियों के बीच ईगो का इलाज खोज सके।
* **एक शिक्षक –**
जो एक दूसरे के साथ विचारों का सही आदान प्रदान करना सिखा सके।
* **एक डॉक्टर –**
जो सब के दिलों में से नफरत जलन क्रोध निकाल कर मोहब्बत और भाईचारा ट्रांसप्लांट कर दे।
* **एक जज –**
जो धर्म जाति पैसा के वर्चस्व को समाप्त कर मानवता और समानता के आधार पर न्याय कर सके।

आज इन सभी व्यक्ति की समाज को अत्यन्त आवश्यकता है। ●

सकारात्मक हो दृष्टि अपनी

प्रवचनकार : आचार्य श्री हिराचंदजी म. सा.

संसार के जीव मात्र पर अनन्त करुणा करने वाले सिद्ध भगवन्त, सदेह प्रत्यक्ष उपकारी अरिहन्त भगवन्त तथा साधना में चरण बढ़ाकर साधकों का मार्ग-निर्देशन करने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन !

बन्धुओं!

सुनी हुई बातों में एक बात ध्यान में आ रही है कि दृष्टि में परिवर्तन किए बिना सृष्टि में परिवर्तन नहीं आता। एक काम एक की नजर में घृणित है, बुरा है, नहीं करना चाहिए वही काम दूसरे की नजर में अच्छा है, करना चाहिए और करने लायक है। आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) से एक दृष्टान्त सुना। गोचरी जाते हुए कहीं पत्थर का काम चल रहा था। तीन आदमी पत्थर गढ़ाई का काम रहे थे। एक अच्छे घर-घराने में जन्मा फिर भी परिस्थिति कुछ ऐसी थी कि उसे पत्थर तोड़ने पड़ रहे थे। पत्थर उठाकर रखने और टाँचने का काम करना पड़ता था। उसको पूछा- ''भाई! तुम्हारी आजीविका कैसे चल रही है?'' उसका उत्तर था- ''भाग में भाटा भाँगणा लिखियोड़ा है, इण वास्ते भाटा भाँगू हूँ।'' घर-परिवार अच्छा है, कुल-खानदान अच्छा है लेकिन परिस्थिति ऐसी आ गई जिससे उसे पत्थर तोड़ने का काम करना पड़ रहा है।

दूसरे व्यक्ति से भी यही प्रश्न किया गया। उसका जवाब था-''भगवान का बड़ा उपकार है, मैं कहीं चोरी नहीं करता, भीख नहीं माँगता, किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता। मैं मेहनत करके, काम करके, शान से जीवन चला रहा हूँ। काम पहला व्यक्ति भी वही कर रहा है और दूसरा भी पत्थर तोड़ने और गढ़ने का ही काम करता है परन्तु दोनों की सोच में अन्तर है। एक कहता है- पत्थर तोड़ने का काम करना पड़ता है, दूसरा कहता- अभी पुण्यवानी है, माँगने की जरूरत नहीं है, हाथ-पैर चलते हैं, इसलिए काम करके संतोष का अनुभव कर रहा हूँ।

तीसरे व्यक्ति से भी यही सवाल किया गया। उसका जवाब था- ''यह मेरी पुण्यवानी है, मेरी किस्मत अच्छी है इसलिए मुझे पत्थर काटने- छाँटने का काम मिला। मैं पत्थर को प्रतिमा बना रहा हूँ। यही प्रतिमा कल मन्दिर में प्रतिष्ठापित होगी, लोग पूजा करेंगे, मुझे इसकी भी दलाली मिलेगी।''

काम तीनों का एक-सा है। काम में फर्क नहीं, मगर दृष्टिकोण तीनों का अलग-अलग है। रोटी बनाने वाली बहिन कहे - ''म्हारे तो ओ ही छाती-कूटो लिख्यो है, म्हारों जीवन तो इण में ही पूरो होवण वालो है।'' दूसरी बहिन इसी काम को उत्साह के साथ करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करती है। एक पाप रूपी कर्मबन्ध करती है, एक पुण्य-बन्ध करती है।

काम कोई खराब नहीं होता। काम छोटा भी नहीं होता। आपने पत्थर का काम करने वाले तीनों व्यक्तियों के उत्तर सुने। तीसरा व्यक्ति भी वही पत्थर तरासने का काम करता है। दिन भर उसी काम पर वह खुशी-खुशी काम करता है, उसे काम करने से संतोष है। वह कहता है- मैं मूर्ति बना रहा हूँ। मेरे द्वारा निर्मित मूर्ति मन्दिर में प्रतिष्ठापित होगी। लोग मूर्ति के दर्शन करने आएँगे, मूर्ति की पूजा होगी। तीनों आदमियों के उत्तर अलग-अलग हैं। यह है दृष्टि- दृष्टि में अन्तर।

एक को आपने मुँहपत्ति दी। उसकी दृष्टि में क्या भाव है- यह कपड़े का टुकड़ा है, किस काम का है। वह उसे फेंक देता है। दूसरा मुँहपत्ति का उपयोग करता है। एक ने सदुपयोग किया, एक ने दुरुपयोग किया। एक निर्जरा करता है, दूसरा कर्म-बन्ध करता है। यह अन्तर

है दृष्टि का। कर्म-बन्ध, भावना पर निर्भर करता है तो कर्म काटना भी भावना से होता है। भाव प्रशस्त है तो पुण्य का अर्जन हो सकता है और भावों में मलिनता है तो पापों के कर्म-बन्धन से बचा नहीं जा सकता। रोटी बनाना आरम्भ का काम है। आरम्भ से बनी रोटी भी यदि संत के अचानक पधारने पर बहराने के उपयोग में आई तो वह पाप का काम होते हुए भी निर्जरा का निमित्त हो सकता है। तीर्थंकर भगवान के शब्दों में कहूँ-

जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा, जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा।

-आचारांगसूत्र अ.४, उ.२, सूत्र-१३४

अर्थात् जो बन्धन के हेतु (आस्त्रव) हैं वे कभी कर्म-निर्जरा (मोक्ष) के हेतु हो सकते हैं और जो कर्म-निर्जरा के हेतु हैं वे ही कभी बन्धन के हेतु हो सकते हैं। एक काम कर्म-बन्ध का कारण भी हो सकता है तो कर्मनिर्जरा का एक कारण भी बन सकता है। स्थानक में झाड़ू निकालने वाला निर्जरा कर सकता है तो यहाँ बैठकर सामायिक करने वाला कर्म-बन्धन कर सकता है। कर्मबन्धन का कारण क्या है? व्यक्ति का दृष्टिकोण कारण है। दृष्टिकोण में सकारात्मकता हो, काम करने वालों को प्रोत्साहित किया जाय, सेवा करने वालों की कद्र हो तो वह काम कर्म-निर्जरा का हो सकता है। परन्तु किसी काम को हल्का बताया तो कर्मबन्धन से बचना नहीं होगा। इसलिए किसी काम में हल्कापन मत देखो।

काम करते-करते आश्रव भी हो सकता है, तो संवर भी हो सकता है। एक पिंगला कर्म बाँधने वाली है तो वहीं पिंगला कर्म काटने वाली हो सकती है। पिंगला वही है पर दोनों एक होते हुए भी दृष्टि के कारण दोनों में परिवर्तन दिखता है। बुरे से बुरा आदमी अच्छा बन सकता है। व्यक्ति बुरा नहीं होता। बुराई आदमी की दृष्टि में होती है। कभी किसी के मन में बैठ गया कि अमुक बुरा है तो फिर वह हर काम में उसकी बुराई ही देखता है। बुरा आदमी अच्छा बनने की कोशिश करता है तब भी उसके प्रति दृष्टि में जब तक परिवर्तन नहीं आता तब तक वह अच्छा करते हुए भी बुरा लगता है।

संसार को बदलने के लिए खुद को बदलिए। विश्व को बदलने के पहले विश्वास बदलिए। सृष्टि बदलने के पहले दृष्टि बदलिये। बुरा कब तक बुरा रहता है? बचपन था तब चंचलता थी, लेकिन अब वह बात नहीं रही। आप बचपन में जैसा करते थे, क्या आज भी वैसा ही करते हैं? आप अपना सोचना, मुझे मत पूछना। मैं भी मानता हूँ बचपन में नादानी रहती है, पर हर समय नादानी का ही भाव रहे, ऐसा सोचना सही सोच नहीं है। बदलिये, पूर्व के आग्रह को बदल देंगे तो आप स्वयं समाधि में रहेंगे और यदि दृष्टि नहीं बदली तो फिर कहावत है ना - ''वो ही डाँडौ, वो ही कवाड़ियो।''

दृष्टि में परिवर्तन कीजिए। दृष्टि को सकारात्मक बनाइए। दृष्टि नहीं बदली तो न स्वयं को शांति मिलेगी, न दूसरों को समाधि प्राप्त हो सकेगी। मैं फिर कहूँ- सारे काम एक आदमी नहीं कर सकता है। आप अपना काम करें, दूसरों को जो उनका काम है करने दें। आपकी सकारात्मक सोच बन गई तो आप स्वयं समाधि में रहेंगे, संघ-समाज में शांति रहेगी। आप शांति और समाधि के रास्ते पर चलेंगे तो आपका सुनना और समझना सार्थक होगा। ●

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर, सर्वांत सोपा व सर्वांत रिजनेबल मार्ग...

जैन जागृति

कव्हर तपशील - जानेवारी २०२४

❖ **गिरनार तीर्थ**

तीर्थंकर भगवान श्री नेमीनाथजी की कल्याणक भूमी गिरनार तीर्थ. (लेख पान नं. १५)

❖ **आनंद दरबार, पुणे – दीक्षा**

आनंद दरबार, दत्तनगर, पुणे येथे वैरागन कु. चांदनी तातडे हिची दीक्षा २ डिसेंबर २०२३ रोजी भव्य महोत्सवात संपन्न झाली. (बातमी पान नं. ९३)

❖ **अरिहंत प्रतिष्ठान, लेकटाऊन**

अरिहंत प्रतिष्ठान, लेकटाऊन, पुणे येथील सौ. कमलबाई रसिकलालजी धारिवाल जैन स्थानक भवनचे उद्घाटन ९ डिसेंबर २०२३ रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ९०)

❖ **गौतम लब्धि फांउडेशन, पुणे**

गौतम लब्धि फांउडेशन द्वारा पुणे येथे दि. १६ व १७ डिसेंबर २०२३ रोजी भव्य गौतम लब्धि फेस्टिवलचे आयोजन संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ८१)

❖ **श्री. नंदकिशोरजी साखला, नाशिक**

नाशिक येथील श्री. नंदकिशोरजी साखला यांची भारतीय जैन संघटनेच्या (बीजेएस) राष्ट्रीय अध्यक्षपदी निवड जाहीर झाली. (बातमी पान नं. ९२)

❖ **श्री. अभयजी संचेती, पुणे – पुरस्कार**

पुणे येथील उद्योजक व धार्मिक, सामाजिक कार्यात अग्रेसर श्री. अभयजी बनसीलालजी संचेती यांना गुरु श्री सोभाग्य स्मृती पुरस्कार देवून सन्मानीत करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९९)

❖ **श्री. कृष्णकुमारजी गोयल, पुणे – सन्मान**

पुणे येथील प्रसिद्ध बिल्डर्स, उद्योजक श्री कृष्णकुमारजी गोयल यांचा ७० व्या वाढदिवसा निमित्त खडकी एज्युकेशन सोसायटी व गौरव समिती तर्फे सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८७)

❖ **आर एम डी फाऊंडेशन – मॅरेथॉन स्पर्धा**

पुणे येथील आर एम डी फाऊंडेशन द्वारा रांजणगाव गणपती येथे भव्य मॅरेथॉन स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले. (बातमी पान नं. ९१)

❖ **सूर्यदत्त ग्लोबल फार्माकॉल २०२३**

सूर्यदत्त ''एस सी पी एच आर'' च्या वतीने पहिल्या सूर्यदत्त ग्लोबल फार्माकॉल २०२३ चे आयोजन नुकतेच संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ७९) •

WE ARE

BRAND CREATORS

ADVERTISE WITH US

Jain Jagruti

(Since 1969)

Mobile : 9822086997, 8262056480

E-mail : jainjagruti1969@gmail.com

Website : www.jainjagruti.in